









# 鲁迅全集

## 第三卷

华盖集

华盖集续编



人民文学出版社

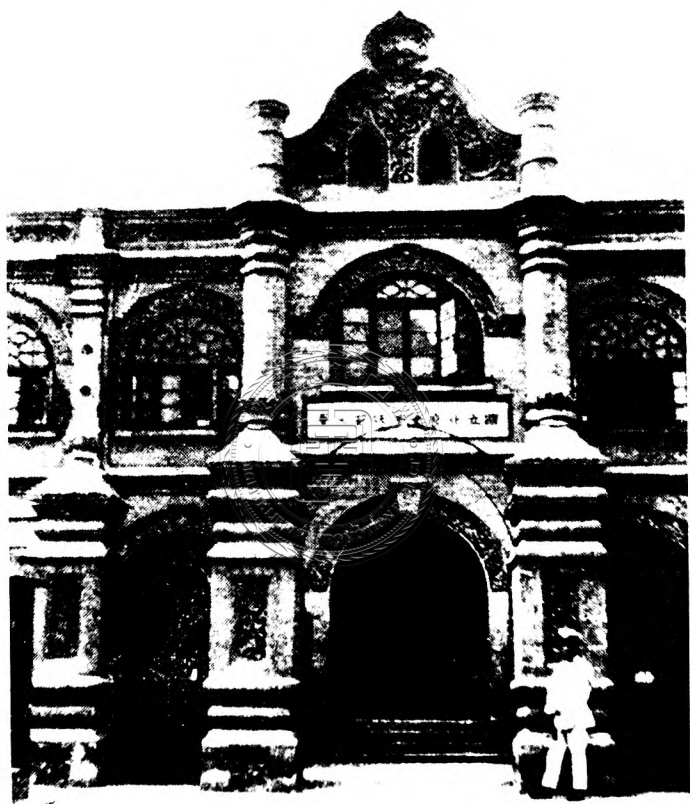
一九八一年·北京





在北京时摄（1925）





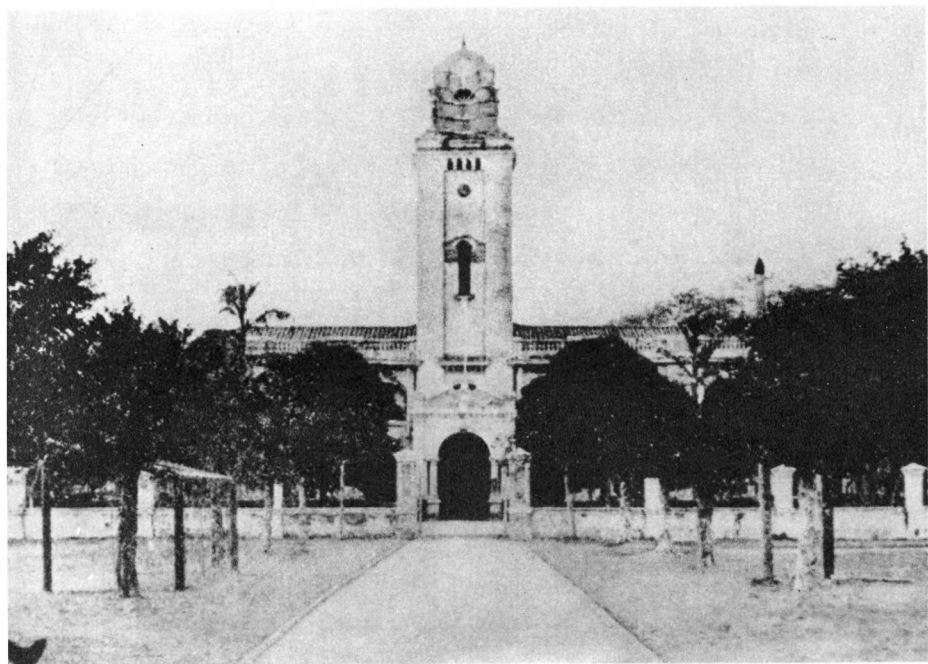
北京女子师范大学





在厦 门 时 摄（1927）





广州中山大学大钟楼



# 目 录

## 华 盖 集

|          |   |
|----------|---|
| 题记 ..... | 3 |
|----------|---|

## 一 九 二 五 年

|                 |    |
|-----------------|----|
| 咬文嚼字(一至二) ..... | 9  |
| 青年必读书 .....     | 12 |
| 忽然想到(一至四) ..... | 14 |
| 通讯 .....        | 21 |
| 论辩的魂灵 .....     | 29 |
| 牺牲谟 .....       | 33 |
| 战士和苍蝇 .....     | 38 |
| 夏三虫 .....       | 40 |
| 忽然想到(五至六) ..... | 42 |
| 杂感 .....        | 48 |
| 北京通信 .....      | 51 |
| 导师 .....        | 55 |
| 长城 .....        | 58 |
| 忽然想到(七至九) ..... | 60 |
| “碰壁”之后 .....    | 68 |

|            |     |
|------------|-----|
| 并非闲话       | 75  |
| 我的“籍”和“系”  | 81  |
| 咬文嚼字(三)    | 86  |
| 忽然想到(十至十一) | 88  |
| 补白         | 100 |
| 答K S君      | 111 |
| “碰壁”之余     | 115 |
| 并非闲话(二)    | 123 |
| 十四年的“读经”   | 127 |
| 评心雕龙       | 133 |
| 这个与那个      | 138 |
| 并非闲话(三)    | 148 |
| 我观北大       | 157 |
| 碎话         | 160 |
| “公理”的把戏    | 164 |
| 这回是“多数”的把戏 | 172 |
| 后记         | 177 |

## 华盖集续编

|    |     |
|----|-----|
| 小引 | 183 |
|----|-----|

## 一九二六年

|               |     |
|---------------|-----|
| 杂论管闲事·做学问·灰色等 | 185 |
| 有趣的消息         | 197 |

|                     |     |
|---------------------|-----|
| 学界的三魂 .....         | 206 |
| 古书与白话 .....         | 213 |
| 一点比喻 .....          | 217 |
| 不是信 .....           | 221 |
| 我还不能“带住” .....      | 242 |
| 送灶日漫笔 .....         | 247 |
| 谈皇帝 .....           | 252 |
| 无花的蔷薇 .....         | 255 |
| 无花的蔷薇之二 .....       | 261 |
| “死地” .....          | 266 |
| 可惨与可笑 .....         | 269 |
| 纪念刘和珍君 .....        | 273 |
| 空谈 .....            | 279 |
| 如此“讨赤” .....        | 284 |
| 无花的蔷薇之三 .....       | 286 |
| 新的蔷薇 .....          | 291 |
| 再来一次 .....          | 297 |
| 为半农题记《何典》后, 作 ..... | 303 |
| 马上日记 .....          | 308 |
| 马上支日记 .....         | 321 |
| 马上日记之二 .....        | 341 |
| 记“发薪” .....         | 349 |
| 记谈话 .....           | 355 |
| 上海通信 .....          | 361 |